इकाई –2

मानव एक संसाधन

चित्र सं० 2.1

© BSTBPC Not to be Published

परिचयः–

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है जिसकी न्यूनतम आवश्यकता रोटी, कपड़ा, मकान, स्वास्थ्य एवं शिक्षा है। पिछले अध्याय में हमनें गाँव की एक कहानी के माध्यम से उत्पादन

के साधनों का अध्ययन किया था, उन साधनों में से एक साधन 'साहस' था। साहस उत्पादन का एक सक्रिय-साधन के रूप में माना गया है और यह साहस कोई निर्जीव चीज नहीं बल्कि सजीव है, जो 'मानव' के रूप में जाना जाता है। इसलिए मानव ही उत्पादन का मूल सूत्रधार है। जिस प्रकार बिना चाभी के ताला नहीं खोला जा सकता उसी प्रकार बिना मानव के उत्पादन-प्रक्रिया या विकास-कार्य नहीं प्रारंभ की जा सकती।

उत्पादन की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के लिए मानव को संसाधन के रूप में जाना गया है। इस संसाधन को 'मानवीय पूँजी' के रूप में भी हम जान सकते हैं। अर्थात् मानव ही समस्त संसाधनों में सर्वोपरी हैं। वर्तमान में 'मानवीय संसाधन' को 'मानवीय पूँजी' कहा जाता है क्योंकि यह उत्पादन क्रिया का प्रमुख अंग अथवा स्त्रोत है।

उद्देश्यः-

किसी देश के विकास के लिए समुचित रूप से संसाधन का प्रयोग होना चाहिए। संसाधन का अत्यधिक उपयोग हेतु 'मानवीय पूँजी' का मजबूत होना आवश्यक है। 'मानवीय पूँजी' मुख्यतः **भोजन, वस्त्र, आवास, स्वास्थ्य, शिक्षा, प्रशिक्षण, सूचना तकनीक एवं प्रबंधन** इत्यादि पर निर्भर करता है जबकि संसाधन हमारे भौतिक-पूँजी की ओर इंगित करता है। इस आधार पर भौतिक एवं मानवीय पूँजी में अंतर देखा जाता है।

© BSTBPC Not to be Published

मानवीय पूँजी सजीव और सक्रिय होता है जबकि भौतिक पूँजी निर्जीव एवं निष्क्रिय होता है। भौतिक पूँजी को उत्पादक और उसे सक्रिय करने में मानवीय पूँजी की अहम् भूमिका होती है।

मनुष्य में छिपी हुई क्षमता को प्रखर करने के लिए उसे मजबूत करना नितांत आवश्यक है। इसी उद्देश्य से हम इस अध्याय में मानव पूँजी के विभिन्न आयामों पर विस्तृत प्रकाश डालने का प्रयास करेंगे। प्रस्तुत अध्याय के माध्यम से मानवीय पूँजी को कैसे समृद्ध किया जाए? इस पर विस्तृत चर्चा करेंगे।

मानवीय-पूँजी जितना समृद्ध होगा उतना ही देश व राज्य की प्रगति के साथ-साथ मानव का जीवन-स्तर उच्च स्तर का होगा।

मानव एक संसाधन रूप में

चित्र : 2.2

मानव एक संसाधन रूप में ।

'मनुष्य संसाधन के रूप में' का अर्थ है देश की कार्यशील जनसंख्या का **'कौशल'** और **'योग्यताएँ'**। जब व्यक्ति राष्ट्रीय उत्पादक के सृजन में अधिक योगदान करने की दृष्टि से योग्यताएँ एवं कौशल प्राप्त कर लेते हैं तो वे संसाधन बन जाते हैं, अर्थात् जब किसी भी व्यक्ति में शिक्षा, स्वास्थ्य और प्रशिक्षण के रूप में निवेश किया जाता है तो वह प्रशिक्षण, दक्षता एवं कौशल हासिल कर लेता है तो वह व्यक्ति राष्ट्र की संपत्ति बन जाता है। ऐसी स्थिति में वह संसाधन रूप में परिवर्तित हो जाता है। वास्तव में अशिक्षित, अप्रशिक्षित, अज्ञानी, अकुशल एवं अस्वस्थ तथा कमजोर व्यक्ति की अपेक्षा शिक्षित प्रशिक्षित, कुशल, ज्ञानी एवं विशिष्टता प्राप्त व्यक्ति की उत्पादकता अधिक होती है और अर्थ-व्यवस्था की चतुर्मुखी विकास में इनका योगदान अधिक होता है।

बच्चो! क्या तुम्हें मालूम है कि तुम एक महत्वपूर्ण संसाधन हो जिसे शिक्षा प्रदान कर एक महत्वपूर्ण मानवीय पूँजी के रूप में परिवर्तित किया जा रहा है।

इस शिक्षा के द्वारा तुम देश के उत्पादन क्षमता के केन्द्र में रहोगे। डॉक्टर, इन्जीनियर, प्रबंधक या शिक्षक के रूप में एक महत्वपूर्ण संसाधन का अंग बन कर देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाओगे।

© BSTBPC Not to be Published

उदाहरण स्वरूप–जिस प्रकार एक देश अपने भौतिक संसाधनों को कारखानों के माध्यम से भौतिक पूँजी में परिवर्तित कर देता है उसी प्रकार छात्र रूपी मानव संसाधन को अभियंता, डॉक्टर, शिक्षक, वकील इत्यादि रूपों में परिवर्तित कर देता है, अर्थात् मानव को संसाधन के रूप में परिवर्तित करने के लिए उसमें निवेश की आवश्यकता पड़ती है। निवेश का स्वरूप भोजन, वस्त्र, आवास, स्वास्थ्य, शिक्षा एवं प्रशिक्षण के रूप में जाना जाता है। प्रस्तुत चित्र में मानव को शिक्षा एवं प्रशिक्षण के द्वारा संसाधन के रूप में दिखाया गया है।

चित्र सं० 2.3

© BSTBPC
Not to be Published

मानव पूँजी

भौतिक एवं मानवीय पूँजी

बच्चो! अब तक तुमने मानव संसाधन के बारे में पढ़ा और उसके महत्व को समझा परंतु मानव पूँजी, भौतिक-पूँजी से किस प्रकार भिन्न है? अब हम इसे जानने का प्रयास करेंगे।

भौतिक पूँजी एवं मानव-पूँजी दोनों ही निवेश का परिणाम है परंतु दोनों के बीच कुछ अंतर है। इन्हें निम्न प्रकार से दर्शाया जा सकता है–

मानवीय पूँजी एवं भौतिक पूँजी में अंतर

(Difference between Human Capital and Physical Capital)

मानवीय पूँजी तथा भौतिक पूँजी दोनों निवेश (Investment) का परिणाम होती हैं। लेकिन दोनों के बीच कुछ अंतर हैं जिन्हें निम्न प्रकार से व्यक्त किया जा सकता है–

भौतिक पूँजी (Physical Capital)	मानवीय पूँजी (Human Capital)
(i) भौतिक पूँजी उत्पादन का **निष्क्रिय साधन** (Passive Resource) है।	(i) मानवीय पूँजी उत्पादन का **सक्रिय साधन** (Active Resource) है।
(ii) भौतिक पूँजी **मूर्त्त** (Tangible) होती है जिसे बाजार में ले जाया जा सकता है।	(ii) मानवीय पूँजी **आमूर्त्त** (Intangible) होती है जिसे बाजार में बेचा नहीं जा सकता। केवल मानवीय पूँजी की **सेवाओं** (Services) को खरीदा या बेचा जा सकता है।
(iii) भौतिक पूँजी को इसके स्वामी (Owner) से **अलग** किया जा सकता है।	(iii) मानवीय पूँजी को इसके स्वामी से **अलग नहीं** किया जा सकता ।
(iv) भौतिक पूँजी देश के अंदर पूर्णतः **गतिशील** (Perfectly Mobile) होती है।	(iv) मानवीय पूँजी **पूर्णतः गतिशील नहीं** (Not Perfectly Mobile) होती। यह राष्ट्रीयता (Nationality) तथा संस्कृति (Culture) से बाधित होती है।
(v) भौतिक पूँजी में समय के साथ लगातार प्रयोग होने के कारण इसमें **ह्रास** (Depreciation) होता है।	(v) मानवीय पूँजी में **उम्र बढ़ने के साथ इसमें ह्रास हो सकता है** लेकिन शिक्षा तथा स्वास्थ्य में लगातार निवेश से इसकी क्षतिपूर्ति की जा सकती है।
(vi) भौतिक पूँजी से इसके स्वामी को **निजी लाभ** (Private Benefit) होता है।	(vi) मानवीय पूँजी से इसके स्वामी को **निजी लाभ** (Private Benefit) भी होता है तथा साथ ही समाज को सामाजिक लाभ भी होता है।

© BSTBPC Not to be Published

मानवीय पूँजी-निर्माण अथवा मानवीय साधनों का विकास

मानव का संसाधन के रूप में परिवर्तन – शिक्षा, स्वास्थ्य प्रशिक्षण, सूचना तकनीक इत्यादि द्वारा।

पूँजी के दो रूप होते हैं भौतिक पूँजी और मानव पूँजी। उत्पादन बढ़ाने के लिए जब मशीन, औजार, उपकरण, फैक्टरी की इमारतें कच्चेमाल इत्यादि का उपयोग किया जाता है तो यह भौतिक पूँजी कहलाता है परन्तु जब ज्ञान, कौशल के द्वारा मनुष्य का उपयोग किया जाता है तो यह मानव पूँजी कहलाता है। जिसके विभिन्न स्त्रोतों का नीचे वर्णन किया जा रहा है–

मानव पूँजी के स्त्रोत

- भोजन
- वस्त्र
- आवास
- स्वास्थ
- शिक्षा
- प्रशिक्षण
- सूचना-तकनीक
- प्रबंधन

भोजन– मनुष्य को जीवित एवं स्वस्थ रहने के लिए शरीर को भोजन देना आवश्यक होता है। जब मनुष्य भूखा होगा तो वह पेट भरने की चिंता के अतिरिक्त अन्य मानसिक स्तर की क्रिया नहीं कर सकेगा अतः भोजन मानव संसाधन की एक प्रमुख आवश्यकता है।

वस्त्र– जब मनुष्य को भोजन की पूर्ति हो जाती है तो वह शरीर ढकने हेतु कपड़े(वस्त्र)की माँग करता है। मनुष्य के लिए वस्त्र, भारत जैसे बदलते मौसम वाले देश में भी एक आवश्यक माँग है। यह एक अलग बात है कि ठंढी जगह में अधिक वस्त्र और गर्म अथवा सामान्य मौसम की जगह में कम वस्त्र की आवश्यकता होती है।

आवास– मनुष्य की तीसरी अनिवार्य माँग सर छिपाने के लिए आवास अर्थात् घर है जिसमें मनुष्य अपने आप को बदलते मौसम में सुरक्षित रख पाता है।

चित्र : 2.4

स्वास्थ्य–स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का विकास होता है अर्थात् मनुष्य का अच्छा स्वास्थ्य ही उसकी सबसे महत्वपूर्ण पूँजी है और इसमें खर्च (व्यय) कर बढ़ोत्तरी करना मानव को एक महत्वपूर्ण संसाधन के रूप में परिवर्तित कर देना है। एक स्वस्थ व्यक्ति अन्य सामान्य

© BSTBPC Not to be Published

व्यक्ति की अपेक्षा निश्चित रूप से अच्छा काम करता है और देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अन्ततः **स्वास्थ्य पर व्यय मानव-पूँजी के निर्माण का एक महत्वपूर्ण स्त्रोत है।**

चित्र : 2.5

शिक्षा–मानव पूँजी–निर्माण में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है । शिक्षा वह माध्यम है जिससे व्यक्ति मानव-पूँजी के रूप में समृद्धि पाता है। इसलिए व्यक्ति अपने विकास और देश के विकास को बढ़ाने के लिए शिक्षा पर व्यय करता है। जिस प्रकार कम्पनियाँ एक निश्चित लाभ को प्राप्त करने के लिए पूँजीगत वस्तुओं पर व्यय करती है उसी प्रकार शिक्षा मानवीय पूँजी की क्षमता बढ़ाकर अधिक उत्पादक बना देता है।

© BSTBPC Not to be Published

नोबेल पुरस्कार विजेता **'प्रो० अमर्त्य सेन'** ने शिक्षा को मानव-पूँजी के रूप में समृद्ध करने के लिए प्राथमिक शिक्षा को नागरिक का **'मूल-अधिकार'** बनाने पर जोर दिया है। विगत् वर्षों के आर्थिक विकास के बाद भी भारत में शिक्षितों की संख्या में पर्याप्त वृद्धि नहीं हो सकी है जो निम्न तालिका से स्पष्ट है।

नीचे दिए तालिका में भारत में शिक्षा के स्तर को प्रतिशत में दिखाया गया है –

वर्ष	व्यक्ति	पुरुष	महिलाएँ
1951	18.3	27.2	8.9
1961	28.3	40.4	15.3
1971	34.5	46.0	22.0
1981	43.6	56.4	29.8
1991	52.2	64.2	39.3
2001	65.4	75.9	54.2

उपरोक्त सारणी को आरेख द्वारा भी व्यक्त कर सकते हैं।

भारत में साक्षरता दर

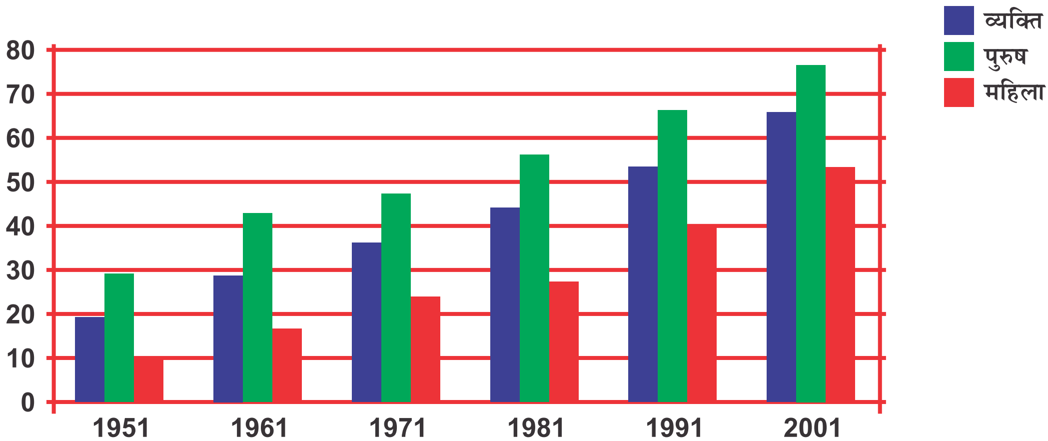

उपर्युक्त सारणी और आरेख से स्पष्ट है कि देश की साक्षरता दर में प्रति दशक वृद्धि हुई है। फिर भी महिलाओं की तुलना में पुरुषों में अधिक साक्षरता रही है। यह तथ्य महिलाओं के प्रति पिछड़ी विचारधारा को परिलक्षित करता है। भारत में पुरुषों और महिलाओं में अधिक शिक्षा प्रसार के लिये हम सबों को संकल्प लेना चाहिए।

© BSTBPC Not to be Published

चित्र : 2.6

रेशम कीटपालन कार्यक्रम में प्रशिक्षण देते हुए अधिकारी

प्रशिक्षणः—शिक्षा के द्वारा हम सिर्फ किताबी ज्ञान बढ़ा पाते हैं। इस ज्ञान को कौशलता के साथ जोड़ने के लिए मनुष्य को विशेष ज्ञान की आवश्यकता पड़ती है। जब किसी खास काम के लिए विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता होती हैं तो उसे तकनीकी ज्ञान से जोड़ते हैं। आधुनिक युग में बढ़ते हुए माँग को देखते हुए प्रशिक्षण की आवश्यकता और बढ़ गयी है क्योंकि हमें विश्व के बाजारों के बीच अपने को कुशल साबित करना है।

भारत में मानवीय पूँजी-निर्माण अथवा मानवीय साधनों का विकास
(Human Capital Formation or Human Resource Development in India)

भारत की विकास योजनाओं का अन्तिम उद्देश्य मानवीय पूँजी-निर्माण अथवा मानवीय साधनों का विकास करना है ताकि दीर्घकाल में आर्थिक सुधारों (Economic Reforms) को सफल बनाया जा सके। देश में गत कुछ वर्षों में मानवीय साधनों के विकास में सराहनीय सफलता मिली है जिसका पता जनसंख्या-सम्बन्धी बेहतर सूचकों, साक्षरता एवं शिक्षा के स्तर, स्वास्थ्य-सुविधाओं के स्तर आदि से चलता है। वास्तव में जीने की औसत आयु, साक्षरता-दर, जन्म तथा मृत्यु-दर, शिशु-मृत्यु दर आदि मानवीय विकास के सूचक (Indicators of Human Development) हैं। मानवीय विकास के इन सूचकों के आधार पर हम कह सकते हैं कि भारत में मानवीय साधनों के विकास में प्रगति हुई है। इसे अग्रांकित तालिका में दिखलाया गया है—

© BSTBPC Not to be Published

भारत में मानवीय विकास के मूल सूचक
(Basic Indicators of Human Development in India)

वर्ष	जीने की औसत आयु	साक्षरता-दर (प्रतिशत)	जन्म-दर (प्रति-हजार)	मृत्यु-दर (प्रति-हजार)	शिशु मृत्यु-दर (प्रति-हजार) जन्म	1993-94 के मूल्यों पर प्रति व्यक्ति आय (रुपये)
1951	32.1	18.3	39.9	27.4	146	3687
1961	41.3	28.3	41.7	22.8	146	4429
1971	45.6	34.5	36.9	14.9	129	5002
1981	54.4	43.6	33.9	12.5	110	5352
1991	55.9	52.2	29.5	9.8	80	7321
2001	63.8	65.4	25.8	8.1	63	10306

Source: Govt. of India, Economic Survey 1996-97, & 184 and Economic Survey 2002-03

इस तालिका से स्पष्ट है कि भारत में योजनाकाल में जीने की औसत आयु (Life Expectancy) में वृद्धि हुई है, **साक्षरता की दर** (Literacy Rate) भी बढ़ी है, **जन्म-दर** (Birth Rate), **मृत्यु-दर** (Death Rate) तथा **शिशु मृत्यु-दर** (Infant Mortality Rate) में कमी हुई है एवं 1993-94 के मूल्यों के आधार पर भी प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि हुई है। आँकड़े इस बात के सूचक हैं कि देश में मानवीय साधनों के विकास में सराहनीय प्रगति हुई है।

भारत में शैक्षणिक अनुसंधान केन्द्र निम्नलिखित है। जिसके द्वारा मानवीय पूँजी के अवयव को विकसित किया जाता है–

संक्षित शब्दों का पूर्ण रूप

U. G. C. - University Grants Commission (विश्वविद्यालय अनुदान आयोग)

N.C.E.R.T.- National Council of Educational Research and Training (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्)

S.C.E.R.T.- State Council of Educational Research and Training (राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्)

I.C.A.R. - Indian Council of Agricultural Research (भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्)

I.C.M.R. - Indian Council of Medical Research (भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद्)

I.C.S.S.R. - Indian Council of Social Science Research (भारतीय समाज विज्ञान अनुसंधान परिषद्)

© BSTBPC Not to be Published

सूचना तकनीक:– आधुनिक युग सूचना तकनीक का युग है। सूचना तकनीक मानव संसाधन को समृद्ध करने की पूँजी है। इसके आधार पर मनुष्य अपने-आप को ज्ञान के क्षेत्र में वृद्धि करता है तथा उसके तकनीक के द्वारा उत्पादन में वृद्धि करता है। सूचना तकनीक के कारण ही उत्पादन के क्षेत्र में सीमित पूँजी-लगाकर भी मुनाफा बढ़ाने की तरकीब सीखने का मौका मिलता है। इस तकनीक के द्वारा हम एक स्थान से दूसरे स्थान के लोगों को भी लाभान्वित कर सकते हैं। बिहार जैसे राज्य में भी ग्रामीण स्तर पर सूचना का लाभ लिया जा रहा है।

चित्र : 2.7

© BSTBPC Not to be Published

स्कूली बच्चे इन्टरनेट पर कार्य करते हुए

प्रबंधनः– शिक्षा के स्तर से प्रबंधन के स्तर को ऊँचा उठाया जा सकता है। उत्पादन के समस्त साधनों को जब हम एक जगह एकत्रित कर अच्छे ढंग से प्रयोग करते हैं तो यह कुशल संगठन का परिचायक है। कुशाग्र बुद्धि वाला व्यक्ति ही कुशल संगठन का नेतृत्व कर सकता है और बुद्धि की कुशाग्रता प्रशिक्षण से ही प्राप्त होता है।

जनसंख्या

जनसंख्या का अभिप्राय मनुष्य की आबादी से है। जनसंख्या किसी भी राष्ट्र के लिए अमूल्य पूँजी है जो वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन, वितरण और उपभोग करती है, अर्थात् देश के आर्थिक विकास में सहयोग करती है। इसलिए जनसंख्या को साधन और साध्य भी माना जाता है। लेकिन प्रत्येक चीज की वृद्धि की एक सीमा होती है और उसका उल्लंघन करना घातक ही होता है।

किसी देश के साधन-संसाधन वहाँ के आबादी के सापेक्ष होते हैं, उसे एक अनुकूल या आदर्श जनसंख्या कह सकते हैं, परन्तु विपरीत स्थिति में जब उपलब्ध संसाधन देश की जनसंख्या को संतुष्ट करने के लिए पर्याप्त नहीं होते हैं, तो इसे जनाधिक्य (अत्यधिक जनसंख्या) कहते हैं। जनाधिक्य की समस्या से कई राष्ट्र संक्रमित हैं परन्तु अगर भारत की बात की जाए तो यह जनाधिक्य के सबसे खतरनाक स्तर पर है जिसे **'जनसंख्या-विस्फोट'** (Population Explosion) की संज्ञा से विभूषित किया जाता है। यह चित्र सं० 2.6 से स्पष्ट होता है।

© BSTBPC Not to be Published

चित्र : 2.6

देश में तेजी से बढ़ती हुयी जनसंख्या

आँकड़े गवाह हैं कि आबादी बेलगाम, बेतहासा एवं अनियंत्रित रूप से बढ़ती ही जा रही हैं। आजादी के समय भारत की जनसंख्या **33 करोड़** थी जो तीव्र गति से बढ़ती हुई **2001 में 102.70 करोड़** हो गयी है। भारत की जनगणना (Census) प्रत्येक दस वर्षों पर की जाती है। इसे निम्न सारणी से देखा जा सकता है–

भारत की जनसंख्या

जनगणना वर्ष	जनसंख्या करोड़ में	दशक में परिवर्तन करोड़ में (प्रतिशत में)	दशक में वृद्धि की दर
1901	23.84	+0.24	–
1911	25.21	+1.37	+5.75
1921	25.13	–0.08	–0.31
1931	27.90	+2.77	+11.00
1941	31.87	+3.97	+14.22
1951	36.11	+4.24	+13.31
1961	43.92	+7.81	+21.64
1971	54.82	+10.90	+24.80
1981	68.33	+13.51	+24.66
1991	84.63	+16.30	+23.86
2001	102.70	+18.01	+21.30

© BSTBPC Not to be Published

उपर्युक्त सारणी में दर्शाये गए दशकीय जनसंख्या वृद्धि को बार-चार्ट के द्वारा भी दिखाया जा सकता है–

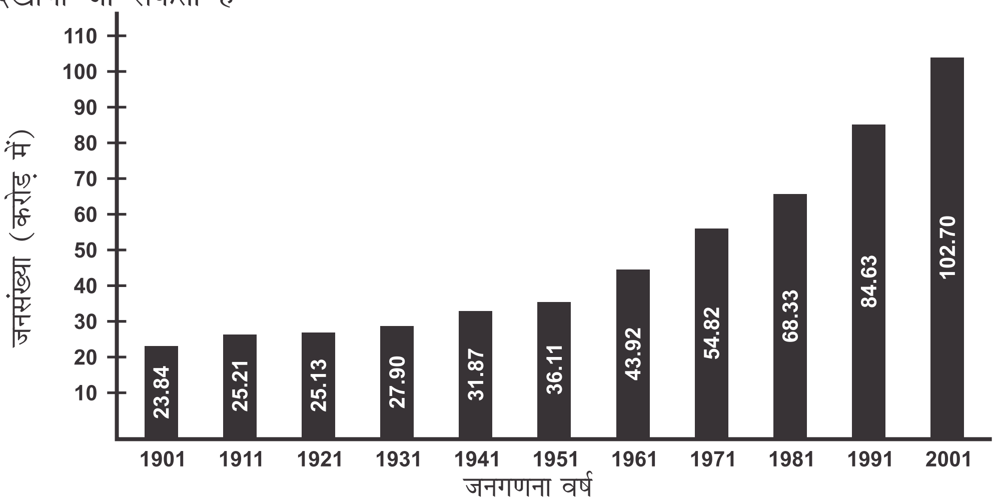

भारत की जनसंख्या राज्य स्तर पर **2001** में निम्न प्रकार से थी जिसे नीचे दिए गए वृत्त–आरेख से भी देख सकते हैं–

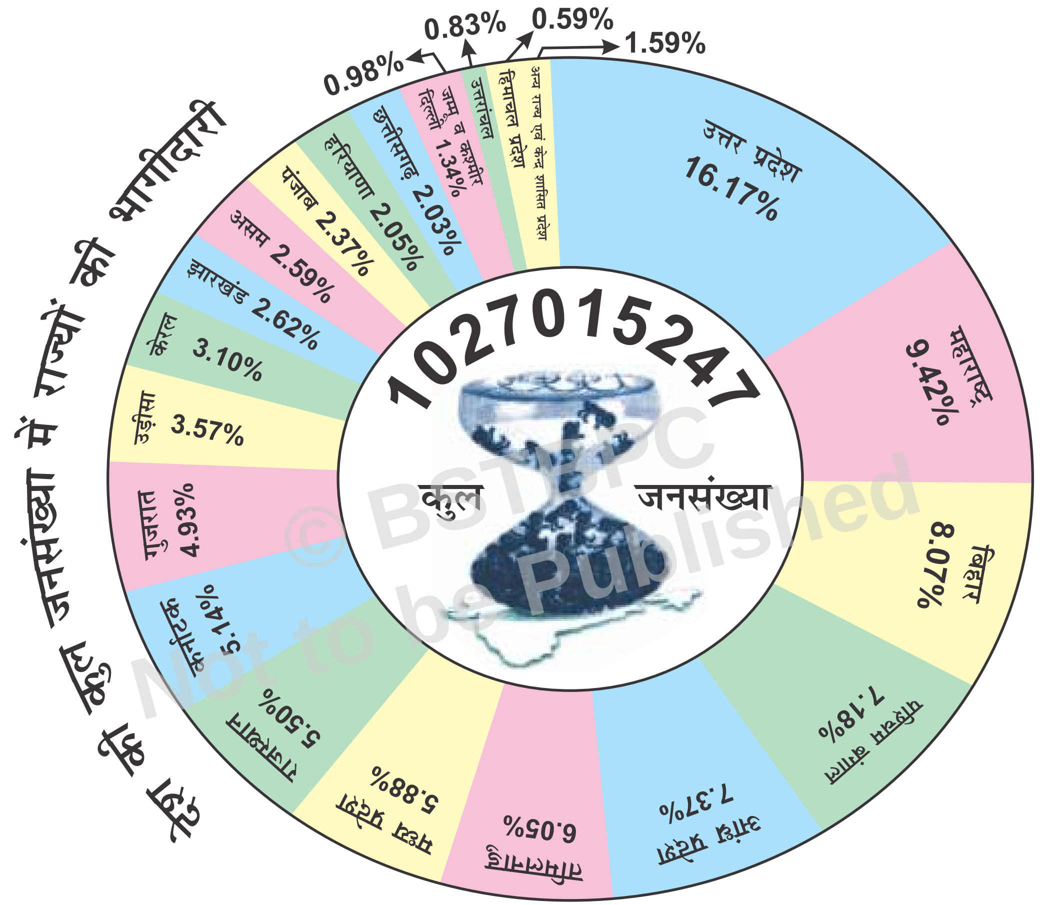

© BSTBPC Not to be Published

बिहार : जनसंख्या और उसके विभिन्न अवयव

2001 के जनगणना के अनुसार बिहार की जनसंख्या 8,28,78,796 (8.28 करोड़), जो भारत की कुल जनसंख्या का 8.07 प्रतिशत है। इस प्रकार जनसंख्या की दृष्टि से उत्तर-प्रदेश तथा महाराष्ट्र के बाद बिहार तीसरा बड़ा राज्य हैं। 1991 में बिहार (अविभाजित बिहार) की जनसंख्या, भारत का कुल जनसंख्या के दस प्रतिशत (10%) से कुछ अधिक थी, जो उत्तर-प्रदेश के बाद बिहार, देश का दूसरा बड़ा राज्य था। झारखण्ड राज्य बन जाने के उपरान्त विभाजित बिहार की जनसंख्या में कमी आ गयी।

बिहार में जनसंख्या वृद्धि-दर–

वर्ष 1991–2001 की अवधि में बिहार की जनसंख्या वृद्धि-दर **28.43** प्रतिशत है, जो भारत की जनसंख्या वृद्धि-दर **21.34** प्रतिशत से अधिक है। **1991-2001** के दशक में राज्य के 22 जिलों की जनसंख्या वृद्धि दर बिहार की औसत जनसंख्या वृद्धि-दर **28.43** प्रतिशत से अधिक रही है। इनमें से नए जिला **'शिवहर'** का स्थान सर्वप्रथम था जिसकी जनसंख्या वृद्धि-दर **36.16** प्रतिशत थी। दूसरी तरफ नालंदा की जनसंख्या वृद्धि-दर **18.64** प्रतिशत थी, जो सबसे कम थी जो 1981 से 1991 के दशक में **21.73** प्रतिशत थी। अर्थात् नालंदा की जनसंख्या वृद्धि दर निश्चित तौर पर घटी है।

नीचे राज्य में सर्वाधिक जनसंख्या एवं सबसे कम जनसंख्या वाले जिलों को दर्शाया गया है –

(1) (अवरोही क्रम में)

राज्य में सर्वाधिक जनसंख्या वाले 5 जिले		
1.	पटना	47,09,851
2.	पूर्वी चम्पारण	39,33,636
3.	मुजफ्फरपुर	37,43,836
4.	मधुबनी	35,70,651
5.	गया	34,64,983

(2) (आरोही क्रम में)

राज्य में सबसे कम जनसंख्या वाले 5 जिले		
1.	शिवहर	5,14,288
2.	शेखपुरा	5,25,137
3.	लखीसराय	8,01,173
4.	मुंगेर	11,35,499
5.	खगड़िया	12,76,677

© BSTBPC Not to be Published

पुनः बिहार में जनसंख्या-वृद्धि के अनुसार पाँच सर्वाधिक वृद्धि वाले जिलों एंव पाँच सर्वाधिक कम जनसंख्या वृद्धि वाले जिलों को दर्शाया गया है–

(3) (अवरोही क्रम में)

राज्य में सर्वाधिक जनसंख्या वृद्धि वाले 5 जिलें		
1.	शिवहर	36.16%
2.	पूर्णिया	35.23%
3.	नवादा	33.03%
4.	सहरसा	33.03%
5.	जमुई	32.90%

(4) (आरोही क्रम में)

राज्य में सबसे कम जनसंख्या वृद्धि वाले 5 जिलें		
1.	नालन्दा	18.64%
2.	मुंगेर	20.34%
3.	लखीसराय	23.94%
4.	बांका	24.47%
5.	भोजपुर	24.58%

जनसंख्या घनत्व–

© BSTBPC Not to be Published

जनसंख्या घनत्व से तात्पर्य प्रतिवर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल में निवास करने वाले व्यक्तियों की संख्या से है। **2001 के जनगणना** के अनुसार बिहार की जनसंख्या घनत्व **880 प्रतिवर्ग किलोमीटर** है जबकि **1991 में यह 685 प्रतिवर्ग किलोमीटर** थी। बिहार राज्य के पाँच सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व वाले जिलों को नीचे दिखलाया गया है–

(5) (अवरोही क्रम में)

राज्य में सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व (प्रतिवर्ग किमी) वाले 5 जिलें		
1.	पटना	1,471 व्यक्ति
2.	दरभंगा	1,442 व्यक्ति
3.	वैशाली	1,332 व्यक्ति
4.	सारण	1,231 व्यक्ति
5.	बेगूसराय	1,222 व्यक्ति

(6) (आरोही क्रम में)

राज्य में सबसे कम जनसंख्या घनत्व (प्रतिवर्ग किमी) वाले 5 जिलें		
1.	कैमूर	382 व्यक्ति
2.	जमुई	451 व्यक्ति
3.	बांका	533 व्यक्ति
4.	प०चंपारण	582 व्यक्ति
5.	औरंगाबाद	607 व्यक्ति

लिंगानुपात (स्त्री–पुरुष अनुपात)

लिंगानुपात या स्त्री पुरुष अनुपात से तात्पर्य प्रतिहजार पुरुषों की तुलना में महिलाओं की संख्या से है। भारत के साथ ही बिहार की जनसंख्या की यह विशेषता है कि यहाँ स्त्रियों की तुलना में पुरुषों की संख्या अधिक है। वर्ष **2001** की जनगणना के अनुसार बिहार में प्रतिहजार पुरुषों पर स्त्रियों की संख्या **921** थी जबकी **1991** में यह संख्या **907** थी। बिहार का स्त्री–पुरुष अनुपात भारत के स्त्री–पुरुष अनुपात से कम है।

राज्य के सर्वाधिक स्त्री–पुरुष अनुपात वाले पाँच जिले तथा सबसे कम स्त्री–पुरुष अनुपात वाले पाँच जिलों को दिखाया गया है–

(7) (अवरोही क्रम में)

राज्य में सर्वाधिक लिंगानुपात वाले 5 जिलें		
1.	सिवान	1033
2.	गोपालगंज	1005
3.	सारण	965
4.	नवादा	948
5.	मधुबनी	943

(8) (आरोही क्रम में)

राज्य में सबसे कम लिंगानुपात वाले 5 जिलें		
1.	पटना	873
2.	भागलपुर	878
3.	मुंगेर	878
4.	खगड़िया	890
5.	सीतामढ़ी	893

© BSTBPC Not to be Published

आओ करें

(1) बच्चो! आप अपने घर के सदस्यों का स्त्री–पुरुष अनुपात निर्धारित करें।

(2) आप अपने विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों के स्त्री–पुरुष अनुपात को ज्ञात करें।

(3) अपने वर्ग में स्त्री–पुरुष अनुपात को ज्ञात करें।

बिहार की साक्षरता–

यदि कोई व्यक्ति किसी भाषा को समझने के साथ–साथ उस भाषा को लिखना–पढ़ना भी जानता हो तो उसे **'साक्षर'** कहते हैं।

2001 के जनगणना के अनुसार बिहार में कुल साक्षरों की संख्या–**31675607** है, जिसमें पुरुष साक्षरों की संख्या– **20978955** है। साक्षर महिलाओं की संख्या–**10696652** है। अर्थात् दो साक्षर पुरुषों की तुलना में केवल एक महिला साक्षर है। **2001** में बिहार में साक्षरता दर **47.53** प्रतिशत है जबकि **1991** में यह **37.49** प्रतिशत थी। इस प्रकार पिछले दशक में बिहार की साक्षरता में मोटे–तौर पर दस प्रतिशत **(10%)** की वृद्धि हुई है, फिर भी भारत के साक्षरता वृद्धि–दर से काफी कम है। भारत की साक्षरता–दर **65.38** प्रतिशत है।

नीचे बिहार राज्य के सर्वाधिक साक्षरता–दर वाले पाँच जिलों तथा सबसे कम साक्षरता–दर वाले पाँच जिलों को दर्शाया गया है ।

© BSTBPC Not to be Published

(9) (अवरोही क्रम में)

राज्य में सर्वाधिक साक्षरता–दर वालें 5 जिले		
1.	पटना	63.82%
2.	रोहतास	62.36%
3.	मुंगेर	60.11%
4.	भोजपुर	59.71%
5.	औरंगाबाद	57.50%

(10) (आरोही क्रम में)

राज्य में सबसें कम साक्षरता–दर वालें 5 जिले		
1.	किशनगंज	31.02%
2.	अररिया	34.94%
3.	कटिहार	35.29%
4.	पूर्णिया	35.51%
5.	मधेपुरा	36.19%

आओ ! क्रियाशीलता ज्ञान-वृद्धि करें

बच्चो! तुम अपनी टोली बनाकर अपने मुहल्ले या गाँव में साक्षर व्यक्तियों की संख्या का पता लगाओ। साथ में स्त्री-पुरुष साक्षरता संख्या का पता लगाकर एक चार्ट द्वारा प्रदर्शित करो।

ग्रामीण और शहरी जनसंख्या :

किसी भी राज्य के लिए शहरीकरण की प्रक्रिया उसके विकास की गति को बताती है। शहरीकरण से आर्थिक विकास पर काफी गहरा प्रभाव पड़ता है यानि शहरीकरण एवं विकास दोनों का घनिष्ठ संबंध है। **जिस राज्य का शहरीकरण जितना अधिक होगा वह राज्य विकास के क्षेत्र में उतना ही अग्रणी (आगे) होगा।**

बिहार में शहरीकरण की स्थिति काफी नाजुक है। बिहार के जिन जिलों का शहरीकरण हुआ उनमें **पटना**, **मुजफ्फरपुर**, **भागलपुर**, **छपरा**, **गया** एवं **वैशाली** प्रमुख हैं। जब औद्योगिक एवं व्यापारिक क्षेत्रों का विकास होता है तो शहरीकरण स्वतः जन्म लेती है। बिहार के कुछ जिलों का शहरीकरण सेवाओं एवं शिक्षा के विस्तार के कारण हुआ जैसे- **पटना** ।

© BSTBPC Not to be Published

वर्तमान में बिहार में ग्रामीण एवं शहरी जनसंख्या का अनुपात 89:11 (2001 जनगणना के अनुसार) है।

बिहार में जनसंख्या वृद्धि के कारण–

बिहार में अत्यधिक जनसंख्या-वृद्धि के कारणों को हम बिंदुवार रूप में इस प्रकार देख सकते हैं–

- गर्म जलवायु
- संयुक्त परिवार प्रथा
- बाल विवाह
- अशिक्षा
- गरीबी
- परम्परागत मान्यताएँ
- परिवार नियोजन के प्रति जागरूकता का अभाव
- अन्य कारण

बिहार राज्य में अत्यधिक रूप से बढ़ती जनसंख्या को नियंत्रित करने के निम्न उपायों को बिंदुवार रूप में इस प्रकार देखेंगे–

- तीव्र आर्थिक विकास
- परिवार नियोजन
- धन तथा आय का समान तथा न्यायपूर्ण वितरण
- आत्म-संयम
- शिक्षा का प्रचार तथा प्रसार
- जागरूकता
- सरकारी प्रयास

राष्ट्रीय जनसंख्या नीति, 2000

भारत में नौवीं पंचवर्षीय योजना (1997-2002) के अन्तर्गत यह स्वीकार किया गया है कि **''दीर्घकालीन विकास''** (Sustainable Development) तथा जनसंख्या में घनिष्ठ संबंध है। विकास क्रिया को बनाये रखने के लिए जनसंख्या को नियंत्रित करना नितांत जरूरी है, इसी उद्देश्य से 15 फरवरी, 2000 को भारत सरकार के द्वारा **'राष्ट्रीय जनसंख्या नीति'** (National Population Policy) की घोषणा की गयी। इस नीति में समान वितरण के साथ दीर्घकालीन विकास के लिए जनसंख्या स्थिरीकरण को मौलिक आवश्यकता माना गया है।

इस नीति के **तत्कालीन**, **मध्यकालीन** तथा **दीर्घकालीन** उद्देश्य हैं। तत्कालीन उद्देश्य के तहत गर्भनिरोध की आपूर्ति, तत्कालीन जरूरतों को पूरा करना, मूलभूत पुनर्जन्म एवं शिशु स्वास्थ्य सेवा उपलब्ध कराने के लिए स्वास्थ्य संरचना, स्वास्थ्य सेवकों तथा समन्वित वितरण प्रणाली की व्यवस्था करना मुख्य उद्देश्य है।

मध्यकालीन उद्देश्य के अन्तर्गत कुल प्रजनन दर को **2010** तक प्रतिस्थापन स्तर पर लाना है।

इस प्रकार इस नीति की **दीर्घकालीन उद्देश्य 2045** तक जनसंख्या को उस स्तर पर स्थिर बनाना है जो दीर्घकालीन विकास की जरूरतों, सामाजिक विकास तथा पर्यावरण सुरक्षा के अनुरूप माना गया है। **2045** तक जनसंख्या को स्थिर करने के लिए राष्ट्रीय जनसंख्या नीति में मुख्यतः निम्नलिखित उपायों की चर्चा की है–

(1) शिशु मृत्यु-दर को प्रति हजार **30** के नीचे लाना।

(2) मातृ मृत्यु-दर (Maternal Mortality Rate) को प्रति लाख **100** से नीचे लाना।

© BSTBPC Not to be Published

(3) सार्वजनिक प्रतिरोध (Universal Immunisation) ।

(4) प्रशिक्षित लोगों द्वारा अच्छे अस्पतालों में **80 प्रतिशत प्रसव** (Deliveries) कराना।

(5) एड्स (AIDS) के प्रति लोगों को जागरूकता करना तथा इसे रोकने के उपाय करना।

(6) दो बच्चों के छोटे परिवार को अपनाने के लिए प्रोत्साहन (Insentive) देना ।

(7) सुरक्षित गर्भपात के लिए सुविधाओं में वृद्धि करना ।

(8) बाल-विवाह को रोकने के कानून का सख्ती से पालन करना।

(9) लड़कियों के विवाह की न्यूनतम आयु **20 साल** या इससे अधिक करना।

(10) जो औरतें 21 वर्ष की आयु के बाद शादी करें और दो बच्चों के बाद **अनुर्वरीकरण** करा ले उनके लिए विशेष पुरस्कार (Reward) की व्यवस्था करना।

(11) गरीबी की रेखा के नीचे रहने वाले वैसे लोगों के लिए स्वास्थ्य बीमा (Health Insurance) की व्यवस्था करना, जो दो बच्चों के बाद **अनुर्वरीकरण** (Sterlization) करा लें।

(12) प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में राष्ट्रीय जनसंख्या नीति पर नजर रखने के लिए National Comission on Population का गठन करना।

© BSTBPC Not to be Published

इस नीति में **2012** तक जनसंख्या को 1100 मिलियन तक सीमित रखने के लिए 10 वर्षों के लिए एक **Action Plan** की चर्चा की गई है जिसमें निम्नलिखित बातें हैं–

(1) ग्राम पंचयात स्तर पर **स्वयंसेवी वर्ग** (Self- Help Groups) बनाये जिनमें मुख्यत: गृहिणियाँ होंगी जो स्वास्थ्य कार्यकर्त्ताओं तथा पंचायतों से संपर्क रखेंगी।

(2) **प्रारंभिक शिक्षा** (Elementary Education) को अनिर्वाय एवं नि:शुल्क करना।

(3) जन्म एवं मृत्यु के साथ-साथ विवाह एवं गर्भाधान (Pregnancy) के रजिस्ट्रेशन को भी अनिवार्य बनाना।

इस नीति के द्वारा सरकार **2045** तक जनसंख्या को स्थिर कर देने की आशा करती है। लेकिन इस नीति की आलोचना में यह कहा जाता है कि सरकार ने जनसंख्या-नियंत्रण का सारा बोझ औरतों पर ही डाल दिया है और मर्दों को स्वतंत्र छोड़ दिया है। दो बच्चों के बाद अनुर्वरीकरण के लिए औरतों के साथ-साथ मर्दों को भी प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए और जनसंख्या-नियंत्रण का बोझ औरतों एवं मर्दों पर बराबर-बराबर पड़ना चाहिए।

राज्य में भी **गाडगिल फार्मूला** के अन्तर्गत **'राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000'** को अपनाने की सिफारिश की गयी है। इस फार्मूला के तहत केन्द्र–सरकार द्वारा अर्जित आय में राज्यों को उचित हिस्सा मिलें इसकी पुष्टि की गयी है अर्थात् जिस राज्य की जनसंख्या कम होगी उस राज्य के लोगों का प्रतिव्यक्ति केन्द्रीय–आय में हिस्सा भी अधिक होगा। विशेषकर बिहार जैसे घनी आबादी वाले राज्य के लिए जनसंख्या नियंत्रित करना निहायत ही जरूरी है। यदि ऐसा नहीं होगा तो बिहार के प्रति व्यक्ति आय में निरन्तर कमी होगी और साथ ही गरीबी और बेरोजगारी जैसी समस्या को झेलने के लिए मजबूर होंगे।

सारांश

मानव पूँजी आर्थिक विकास की पूँजी है। मानव पूँजी निर्माण से ही भौतिक पूँजी का विस्तार संभव है। शिक्षित, प्रशिक्षित एवं कुशल श्रमिक का अशिक्षित, अप्रशिक्षित एवं अकुशल व्यक्ति के अपेक्षा आय के सृजन में अंशदान काफी अधिक बनाने हेतु जरूरी है कि शिक्षा, स्वास्थ्य, उच्चजीवन स्तर पर विशेष ध्यान देकर मानव विकास को आगे की ओर बढ़ाया जाए। **मानव पूँजी भौतिक पूँजी से भी ज्यादा महत्वपूर्ण है।** मानव पूँजी का आशय लोगों में निहित उत्पादकीय ज्ञान एवं कौशल से है।

विशेषकर अधिक जनसंख्या वाले देश एवं राज्य के लिए मानव संसाधन पूँजी का मजबूत होना राष्ट्रहित के लिए एक स्तंभ के समान है। जिस राज्य व देश की मानव पूँजी का अवयव जितना ही मजबूत होगा उस राष्ट्र की आर्थिक स्थिति भी अच्छी होगी।

© BSTBPC
Not to be Published

अभ्यास :

I. वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

सही उत्तर का संकेताक्षर (क, ख, ग, घ) लिखें।

1. मनुष्य की मूलभूत आवश्यकताएँ हैं?

(क) भोजन और वस्त्र (ख) मकान

(ग) शिक्षा (घ) उपयुक्त सभी

2. निम्न में से कौन मानवीय पूँजी नहीं है?

(क) स्वास्थ्य (ख) प्रशिक्षण

(ग) अकुशलता (घ) प्रबंधन

3. प्रो० अमर्त्य सेन ने प्राथमिक शिक्षा को मानव के लिए क्या बनाने पर जोर दिया है?

(क) मूल अधिकार (ख) मूल कर्त्तव्य

(ग) नीति-निर्देशक तत्व (घ) अनावश्यक

4. जनगणना 2001 के अनुसार भारत की साक्षरता दर है?

(क) 75.9 प्रतिशत (ख) 65.4 प्रतिशत

(ग) 54.2 प्रतिशत (घ) 64.5 प्रतिशत

5. जनगणना 2001 के अनुसार मानव की औसत आयु निम्न में से क्या है?

(क) 65.4 वर्ष (ख) 60.3 वर्ष

(ग) 63.8 वर्ष (घ) 55.9 वर्ष

6. बिहार राज्य के किस जिले की जनसंख्या सबसे अधिक है?

(क) पटना (ख) पूर्वी चम्पारण

(ग) मुजफ्फरपुर (घ) मधुबनी

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें :

1. मानव पूँजी-निर्माण से सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में .... होता है।

© BSTBPC Not to be Published

2. .... संसाधन उत्पादन का सक्रिय साधन है।

3. मानवीय साधन के विकास के लिए............................अनिवार्य है।

4. 2001 की जनगणना के अनुसार भारत की जनसंख्या............................करोड़ है।

5. 2001 की जनगणना के अनुसार सबसे कम साक्षरता वाला राज्य............................है।

6. बिहार में 2001 के जनगणना के अनुसार साक्षरता दर............................है।

III. एक वाक्य में उत्तर दें :

1. मानव संसाधन क्या है?
2. हमें मानव संसाधन में निवेश की आवश्यकता क्यों पड़ती है?
3. साक्षरता व शिक्षा में क्या अंतर है?
4. भौतिक व मानव–पूँजी में दो अंतर बताएँ।
5. विश्व जनसंख्या की दृष्टि से–भारत का क्या स्थान है?
6. जन्म–दर क्या है?
7. मृत्यु दर क्या है?
8. एक साक्षर व्यक्ति कौन है?
9. प्रारम्भिक (प्राथमिक) शिक्षा क्या है?
10. पेशेवर शिक्षा क्या है?

© BSTBPC Not to be Published

IV. संक्षिप्त रूप को पूरा रूप दें :

1. G.D.P
2. U.G.C.
3. N.C.E.R.T.
4. S.C.E.R.T.
5. I.C.M.R.

V. लघु उत्तरीय प्रश्न :

(उत्तर 20 शब्दों में दें)

1. मानव तथा मानव संसाधन को परिभाषित करें।
2. मानव संसाधन उत्पादन को कैसे बढ़ाता है?
3. किसी देश में मानव-पूँजी के दो प्रमुख स्रोत क्या हैं?
4. किसी व्यक्ति का प्रशिक्षण देकर कुशल बनाना क्यों जरूरी है?
5. भारत में जनसंख्या के आकार को एक बार चार्ट (ग्राफ) द्वारा स्पष्ट करें ।
6. बिहार के सबसे अधिक जनसंख्या-वृद्धि वाले 5 जिलों के नाम लिखें।
7. बिहार के सबसे कम जनसंख्या वाले 5 जिलों के नाम लिखें।
8. बिहार देश का सबसे कम साक्षर राज्य है इसके मुख्य दो कारण लिखें ।

VI. दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न :

(उत्तर 100 शब्दों में दें)

1. मानव संसाधन क्या है? मानव संसाधन को मानव पूँजी के रूप में कैसे परिवर्तित किया जाता है?
2. मानव पूँजी और भौतिक-पूँजी में क्या अंतर है? इसे तालिका द्वारा स्पष्ट करें। क्या मानव पूँजी भौतिक पूँजी से श्रेष्ठ है?
3. भारत में मानवीय-पूँजी निर्माण के विकास का परिचय दें।
4. मानवीय साधनों के विकास में शिक्षा, स्वास्थ्य एवं आवास की भूमिका की विवेचना करें।
5. भारत की राष्ट्रीय जनसंख्या-नीति पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें।

© BSTBPC Not to be Published

उत्तर

I. वस्तुनिष्ठ :

(1) घ (2) ग (3) क (4) ख (5) ग (6) क

II. रिक्त स्थान :

(1) वृद्धि (2) मानव (3) शिक्षा (4) 102.70
(5) बिहार (6) 47 प्रतिशत

परियोजना कार्य (Project Work) :

I. प्रश्नावली द्वारा क्षेत्र के जनसंख्या संबंधी सूचनाओं को प्राप्त करें। (व्यक्तिगत अध्ययन द्वारा)

1. उत्तर दाता का नाम – ....
2. उम्र – ....
3. शिक्षा – ....
4. लिंग – ....
5. अपने परिवार के कुल सदस्यों की संख्या – ....
6. अपने परिवार के कुल पुरुषों की संख्या – ....
7. अपने परिवार के कुल महिलाओ की संख्या – ....
8. परिवार के कुल लड़कों की संख्या – ....
9. परिवार के कुल लड़कियों की संख्या – ....
10. परिवार की मासिक आमदनी – ....
11. परिवार के आय का मुख्य स्त्रोत – ....

II. मानव पूँजी के स्त्रोत को वरीयता के अनुसार देते हुए एक चित्रमय नोट तैयार करें।

III. देश की कुल जनसंख्या में राज्यों की भागीदारी प्रतिशत को एक वृत्त-चित्र द्वारा दर्शायें।

IV. भारत की जनसंख्या के प्रतिशत वृद्धि(दशकीय) को ग्राफ में बिंदुरेखीय द्वारा प्रदर्शित करें।

© BSTBPC Not to be Published